BA Part II (Gen/GE-1)

Dr. Chiranjeev Kr Thakur
Sociology.

Lecture II

बेरोजगारी के प्रकार -

3) छिपी बेरोजगारी - इसे अप्रत्यक्ष बेरोजगारी भी कहा जाता है। इस प्रकार की बेरोजगारी प्रायः लोगों की दृष्टि में नहीं आ पाती, इसलिये इसे छिपी बेरोजगारी कहते हैं। किन्तु इस प्रकार की बेरोजगारी भी निर्धनता और अन्य अनेक सामाजिक समस्यायें उत्पन्न करती है, इसलिये ऐसी बेरोजगारी को अनदेखा नहीं किया जाना चाहिये। उदाहरणार्थ एक परिवार की आय का एकमात्र साधन कृषि है, उस परिवार के पास 2 एकड़ जमीन है और 3 वयस्क पुरुष। इस खेती के काम को एक या दो सदस्य भी कर सकते हैं किन्तु अन्य संसाधन उपलब्ध न होने के कारण तीनों सदस्य उसी जमीन पर कृषि करते हैं। इस बात का आर्थिक दुष्प्रभाव इस परिवार की स्थिति पर पड़ना सुनिश्चित है। इसे ही छिपी बेरोजगारी कहते हैं।

4) शैक्षिक बेरोजगारी - यह बेरोजगारी शिक्षितों के अनुपात में रोजगार के अवसर उपलब्ध न होने के कारण उत्पन्न होती है। इस दुःखद स्थिति के लिये मुख्य रूप से केन्द्र

केन्द्र और राज्य सरकारें उत्तरदायी होते हैं। जब सरकार की दृष्टि में शिक्षा से अधिक महत्वपूर्ण धर्म या जाति की राजनीति, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध तथा काले कमाई हो जाती है तो शिक्षा व्यवस्था पटरी से उतर जाती है। दोषपूर्ण शिक्षा व्यवस्था शिक्षित बेरोजगारी की संख्या में वृद्धि होने लगती है।

5) अर्द्ध बेरोजगारी – यह बेरोजगारी का सबसे संवेदनशील और सर्वाधिक विध्वंसकारी रूप है। ऐसी बेरोजगारी में व्यक्ति न घर का रहता है और न ही घाट का। अर्द्ध बेरोजगारी में व्यक्ति वर्ष में कुछ दिन या कुछ माह बेरोजगार रहता है। इस अर्थ में मौसमी बेरोजगारी और अर्द्ध बेरोजगारी में कोई अन्तर नहीं है। मौसमी बेरोजगारी भी अर्द्ध बेरोजगारी उत्पन्न करती है। पूर्णतः रोजगारयुक्त व्यक्ति को समाज में निरन्तर सम्मान और पूर्णतः बेरोजगार व्यक्ति को समाज में निरन्तर उपेक्षा मिलती है। दोनों श्रेणी के व्यक्ति क्रमशः सम्मान और उपेक्षा के आदी हो जाते हैं। किन्तु एक अर्द्ध बेरोजगार व्यक्ति को रोजगार के समय में वह सम्मान नहीं मिलता, जो उपेक्षा उसे बेरोजगारी के समय में झेलनी पड़ती है, इस स्थिति में आर्थिक के साथ-साथ व्यक्ति का सामाजिक जीवन भी नष्ट हो जाता है।